# इकाई 5 काल की अवधारणा

**इकाई प्रारूप**


**5.0** उद्देश्य

**5.1** प्रस्तावना

**5.2** काल की अवधारणा व भेद

- **5.2.1** मूर्तकाल का स्वरूप अथवा स्थूल काल
- **5.2.2** अमूर्तकाल का स्वरूप अथवा सूक्ष्मकाल

**5.3** काल के सन्दर्भ में दिवस के प्रकार

- **5.3.1** सौरदिवस
- **5.3.2** चान्द्रदिवस
- **5.3.3** सावनदिवस
- **5.3.4** नाक्षत्रदिवस

**5.4** चान्द्रमास के सन्दर्भ में पक्ष विचार

- **5.4.1** चान्द्रमासीय शुक्लपक्ष
- **5.4.2** चान्द्रमासीय कृष्णपक्ष

**5.5** मास की परिभाषा एवं भेद

- **5.5.1** सौरमास
- **5.5.2** चान्द्रमास
    - **5.5.2.1** शुक्लादि चान्द्रमास
    - **5.5.2.2** कृष्णादि चान्द्रमास
- **5.5.3** नाक्षत्रमास
- **5.5.4** सावनमास

**5.6** वर्ष की परिभाषा एवं भेद

- **5.6.1** सौरवर्ष
- **5.6.2** चान्द्रवर्ष
- **5.6.3** सावनवर्ष
- **5.6.4** बार्हस्पत्य वर्ष

**5.7** अयन की परिभाषा एवं भेद

- **5.7.1** उत्तरायण
- **5.7.2** दक्षिणायण

**5.8** गोल की परिभाषा एवं भेद

- **5.8.1** उत्तरगोल
- **5.8.2** दक्षिणगोल

**5.9** सारांश




ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

**5.10** शब्दावली

**5.11** उपयोगी पुस्तकें

**5.12** बोध प्रश्न

## 5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको :

- प्राचीन और आधुनिक कालमानों का तुलनात्मक ज्ञान हो सकेगा
- शुक्ल-कृष्णादि मासों के शास्त्रीय दृष्टिकोण का अवबोध हो सकेगा।
- काल की महिमा को समझकर वास्तुशास्त्रोक्त काल को जान सकेंगे।
- काल के मूलभूत अंग व समस्त तथ्यों को समझने में समर्थ हो सकेंगे।
- काल क्या है इसके बारे में विस्तृत रूप से अधिगम कर सकेंगे।
- काल की सूक्ष्म से सूक्ष्मतम तथा बृहत से बृहत्तम इकाई का ज्ञान हो सकेगा।

## 5.1 प्रस्तावना

वस्तुतः इस जगत में जो कुछ भी है वह सब काल के जाल में समाया हुआ है। वैदिक ऋषि यास्कानुसार काल वह शक्ति है जो सबको गति देती है। हमारे जीवन के आरम्भ से अन्तिम क्षण तक की गति का मूल कारण काल ही है। अगर हम काल के महत्व को समझे तो इस संसार में गति अथवा कर्म का मूलाधार काल ही है क्योंकि कोई भी गति या कर्म किसी काल में ही किया जाता है, चाहे वह सूक्ष्म हो या व्यापक। यह (काल) एक तरफ मृत्यु का पर्याय है तो भी सभी प्राणियों को क्षय की तरफ ले जाता है अर्थात् जैसे-जैसे समय व्यतीत होता है प्राणी क्षीण होता जाता है और अन्ततोगत्वा परमक्षय अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। वस्तुतः वास्तुशास्त्र में काल का महत्व व्यापक रूप से प्रतिपादित है। काल का मुख्य आधार ही देश है क्योंकि देश के भेद से काल में भी भेद आ जाता है। अतः व्यक्ति के जीवन में होने वाले हर कार्य तथा घटने वाली हर घटना के पीछे निश्चित रूप से काल का हाथ होता है। आवास हेतु भूमि पूजन से लेकर भवन निर्माण - द्वार स्थापना- गृह प्रवेश मुहूर्त आदि का शोधन व समष्टि तथा व्यष्टिगत समस्त शुभाशुभ का विचार तक इसी काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म एवं स्थूल दोनों रूपों द्वारा होता है अर्थात् सर्वत्र काल गणना का महत्व है ऐसा हमें स्वीकारना चाहिए। काल के विवेचन के बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। इसके बारे में विस्तार से विवेचन करना आप अधिगमकर्ताओं को असहज कर सकता है इसलिए सामान्यतः जिन कालमानों की अपेक्षा इस पाठ्यक्रम में है उनका प्राथमिक रूप से इस इकाई में प्रतिपादन किया जा रहा है जिससे कि आप (अधिगमकर्ताओं) को समझने में सरलता हो सकेगी।

## 5.2 काल की अवधारणा व भेद

सामान्य जन मानस की दृष्टि में काल का नाम आते ही उनके चित्तपटल पर साक्षात् मृत्यु का भाव अंकित हो जाता है। वे इस काल को हम प्राणियों के प्राणों को हरने वाले यमराज के नाम से जानते है। अर्थात् सामान्य जन को हम इस सम्बन्ध में कहते हुए सुन भी सकते हैं कि

अरे तेरा काल आ गया यहां पर काल से तात्पर्य है कि तेरी मृत्यु आ गयी है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि काल का एक रूप तो साक्षात् काल (यम) है और दूसरा रूप काल का गणनात्मक (जिसकी गणना की जाए)है। यहां पर हम गणनात्मक काल को अधिगमकर्ताओं की सरलता के लिए काल को मुख्यतः **स्थूल काल और सूक्ष्म काल** के रूप में दो रूपों में बांट सकते हैं। जिनका विवरण निम्न है -

### 5.2.1 मूर्तकाल का स्वरूप अथवा स्थूल काल

जैसा कि सुविदित है स्थूल काल का ही दूसरा नाम मूर्तकाल भी है। यह काल की गणना करने में सबसे छोटी इकाई भी है, यही प्राणादिकाल भी है। प्राण का ही दूसरा नाम असु है। जैसे 1 प्राण किस स्वस्थ व्यक्ति के श्वांस लेने व छोड़ने का समय **10 दीर्ध अक्षर का उच्चारण काल त्र 10 विपल त्र 4 सेकेण्ड। इसी प्रकार 6 प्राण की एक विनाडी (पल), 60 विनाडी** (पल) की। नाडी, 60 नाड़ी (घटी) का एक नाक्षत्र अहोरात्र कहा गया है। 30 अहोरात्र का एक मास होता है। दो सूर्योदयों के मध्य का काल सावन दिन कहलाता है। संक्षिप्त रूप से कह सकते है यथा -

| क्रम | स्थूल काल अवधि | सामान्य कालखण्ड | टिप्पणी |
|---|---|---|---|
| 01. | 10 दीर्घाक्षर उच्चारण काल | 01 प्राण | 10 विपल |
| 02. | 06 प्राण | 60 विपल | 01 पल |
| 03. | 60 पल | 01 नाड़ी (घटी) | 24 मिनट |
| 04. | 60 नाड़ी | 01 अहोरात्र (दिन - रात्रि) | नाक्षत्र दिवस |
| 05. | 30 अहोरात्र (दिन - रात्रि) | 01 मास | |
| 06. | 06 मास | 01 अयन | |
| 07. | 02 अयन | 01 वर्ष | सौर वर्ष |
| 08. | एक सौर वर्ष | एक दिव्य दिन | देवताओं का एक दिन |
| 09. | 360 दिव्य दिन | एक दिव्य वर्ष | 360 सौर वर्ष |
| 10. | 1200 दिव्य वर्ष | कलियुग का मान | 432000 सौर वर्ष |
| 11. | 2400 दिव्य वर्ष | द्वापर युग का मान | 864000 सौर वर्ष |
| 12. | 3600 दिव्य वर्ष | त्रेता युग का मान | 1296000 सौर वर्ष |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **13.** | 4800 दिव्य वर्ष | सत (कृत) युग का मान | 1728000 सौर वर्ष |
| **14.** | 12000 दिव्य वर्ष | चतुर्युगी अथवा महायुग (चारों युगों का मान) | 4320000 सौर वर्ष |
| **15.** | 71 चतुर्युगी/महायुग | एक मन्वन्तर (852000 दिव्य वर्ष) | 306720000 सौरवर्ष |
| **16.** | 14 मन्वन्तर | एक कल्प (ब्रह्मा जी का केवल सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य का समय) | 4294080000 सौरवर्ष |
| **17.** | 7200 दिव्यवर्ष, एक कल्प में सन्धिकाल | 14 मन्वन्तरों में 15 सन्धिकाल होते हैं, 1 सन्धि का समय सतयुग तुल्य होता है,<br>(4800 x 15 = 7200 दिव्य वर्ष) | 25920000 सौर वर्ष |
| **18.** | 1000 महायुग | एक ब्रह्मदिन (कल्प) = 14 मन्वन्तर + 15 सन्धिकाल | 4320000000 सौरवर्ष |
| **19.** | 02 कल्प | एक ब्रह्म अहोरात्र (ब्रह्मा जी का दिन-रात) | 8640000000 सौरवर्ष |
| **20.** | 720 कल्प | एक ब्रह्म वर्ष (360 दिन के तथा 360 कल्प रात्रि के) | 3110400000000 |
| **21.** | 72000 कल्प (अपने मान से 100 वर्ष) | ब्रह्म आयु | 311040000000000 सौर वर्ष |
| **22. इसी प्रकार इसके अनन्तर नए ब्रह्मा जी की उत्पत्ति होती है, फिर से नई सृष्टि बनती है तथा यही क्रम आगे भी क्रमशः चलता रहता है।** | | | |

## 5.2.2 अमूर्तकाल का स्वरूप अथवा सूक्ष्मकाल

वस्तुतः इस अमूर्तकाल की सबसे छोटी इकाई त्रुटि है। दूसरे शब्दों में कहें तो हम कह सकते है एक सुई से कमल पत्र को छेदने में जितना समय लगता है वह त्रुटि है। इसलिए कहा भी है- **सूच्या भिन्ने पद्मपत्रे त्रुटिरित्यभिधीयते**। इसके अलावा भी अमूर्तकाल में रेणु- लव- लीक्षक भी आते हैं, जिन्हें हम इस प्रकार से समझ सकते हैं –

| क्रम | सूक्ष्म काल | विवरण |
|---|---|---|
| 01. | एक त्रुटि | सुई की नोक से पद्म (कमल) पत्र को भेदने में लगा समय। |
| 02. | एक त्रुटि | ($1 \div 3240000$ सेकिण्ड) |
| 03. | 60 त्रुटि | 1 रेणु ( $1 \div 54000$ सेकिण्ड) |
| 04 | 60 रेणु | 1 लव ( $1 \div 900$ सेकिण्ड) |
| 05. | 60 लव | 1 लीक्षक ( $1 \div 15$ सेकिण्ड |
| 06. | 60 लीक्षक | 1 प्राण (दश दीर्घ अक्षर के उच्चारण का काल) |

## 5.3 काल के सन्दर्भ में दिवस के प्रकार

वस्तुतः यह सर्व विदित है कि जब तक सूर्य आकाश में रहता है तब तक दिन रहता है अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय दिन कहलाता है। इसे हम यदि शास्त्रीय दृष्टि से समझे तो जब सूर्य उदयक्षितिज से उपर उठता है तो दिन रहता है और जब अस्त (पश्चिम) क्षितिज से नीचे उतरता है तब रात्रि कहलाती है। इसी तरह के दिन और रात को मिलाकर एक अहोरात्र बनता है। काल के सन्दर्भ में दिन के चार प्रकार कहे गये हैं, जैसे - **सौर, चान्द्र, सावन तथा नाक्षत्र दिवस**। आइए अब इन चार प्रकार के दिनों के बारे में विस्तृत रूप से अध्ययन करते हैं-

### 5.3.1 सौर दिवस

सौर दिवस शब्द से ही ज्ञात हो रहा है कि कहीं न कहीं इस प्रकार के दिन का सम्बन्ध सूर्य से है। अतः शास्त्रीय मान्यता के अनुसार हम कह सकते हैं कि जितने समय में सूर्य एक अंश का भोग करता है उस समय को एक सौर दिवस अथवा सौर दिन कहते हैं। इस प्रकार एक अंश को भोगने में एक सौर दिन का समय लगता है अतः भ चक्र का एक भ्रमण (360 अंशों का भ्रमण) करने में सूर्य को 360 सौर दिन लगते हैं। सूर्य के द्वारा लगाए गए इसी एक भ्रमण को सौर वर्ष के नाम से जानते हैं।

### 5.3.2 चान्द्र दिवस

जैसे सौर दिवस का सम्बन्ध सूर्य से है इसी तरह चान्द्र दिवस का सम्बन्ध चन्द्रमा से है। इस प्रकार के दिन को हम इस प्रकार से समझ सकते हैं कि चन्द्र तीव्र गतिक ग्रह है तथा जब सूर्य और चन्द्रमां एक राशि अंश कला विकला पर होते हैं तब अमान्त अर्थात् अमावस्या का अन्तिम बिन्दु होता है। यहीं से जब सूर्य को छोड़कर चन्द्रमां आगे बढ़ जाता है और जब सूर्य से चन्द्रमा $12^\circ$ (अंश) दूर हो जाता है तब इस समय से एक तिथि का निर्माण होता है। तिथि का दूसरा नाम ही चान्द्र दिवस अथवा चान्द्र दिन है। इस प्रकार तीस तिथियों का एक मास होता है तथा 12 मासों का एक चान्द्र वर्ष होता है। इस प्रकार के चान्द्र दिन एक एक वर्ष में 354 होते हैं। अर्थात् हम कह सकते हैं कि एक वर्ष में 354 चान्द्र दिवस होते हैं।

### 5.3.3 सावन दिवस

सूर्य सिद्धान्त नामक ग्रन्थ में सावन दिवस के सन्दर्भ में लिखा है **उदयोउदयाद्भानोर्भूमिसावनवासरः** अर्थात् सामान्य शब्दों में कहें तो एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के मध्य का समय सावन दिवस अथवा सावन दिन होता है। यह लगभग 24 घण्टे का होता है इसी को दिन रात यानी अहोरात्र भी कह सकते हैं। और भूमि पर व्यवहार में आने वाला दिन भी यही सावन दिन भी कहलाता है।

### 5.3.4 नाक्षत्रदिवस

वस्तुतः नाक्षत्र दिवस का मान निश्चित होता है इसके सन्दर्भ में आचार्यों ने ग्रन्थों में नाक्षत्र दिवस का तात्पर्य बताते हुए लिखा हैं कि **नाड़ीषष्ट्यातु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम्** यहां नाड़ी षष्ठी अर्थात् साठ घटी का एक नक्षत्र दिवस अथवा नाक्षत्र दिन कहा गया है। नाक्षत्र दिन का सम्बन्ध जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है कि नक्षत्र से है और यह 60 घटी अर्थात् 24 घण्टे का ही होता है यह इसका स्थिर मान है। इसकी अवधि में एक निमेष भी कम या अधिक नहीं होता है। सौर दिन हो या चान्द्रदिन अथवा सावन दिन इनका मान स्थिर नहीं है परन्तु केवल नाक्षत्र दिन ही मात्र एक ऐसा दिन है कि जिसका मान 60 घटी अथवा 24 घण्टे निश्चित है। सामान्यतया नक्षत्र शब्द के अर्थ से ज्ञात होता है कि **न क्षरतीति अथवा न गच्छतीति नक्षत्रम्** अर्थात् नक्षत्र का क्षय नहीं होता है अथवा नक्षत्र चलता नहीं है। इसका तात्पर्य हम उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं, जैसे किसी दिन हमने दिल्ली स्थित इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय से किसी नक्षत्र को दिन के दश बजे राशिचक्र में जहां वेध किया है, उसके अगले दिन 24 घण्टे बाद ठीक दश बजे इसी स्थान से वेध करने पर वह नक्षत्र निश्चित रूप से ठीक वहीं अर्थात् उसी स्थान पर आकाश में वेध होगा, अर्थात् वह नक्षत्र ठीक उसी स्थान पर दिखाई देगा जहां कल दिखाई दिया था।

## 5.4 चान्द्रमास में पक्ष विचार

सामान्यतया हम अब तक यह समझ चुके हैं कि सूर्य और चन्द्रमां के मध्य बारह - बारह अंश की दूरी से एक - एक तिथि का निर्माण होता है इसी तरह जब तीस तिथियों का निर्माण हो जाने पर इन तीस तिथियों के समूह को एक चान्द्रमास कहते हैं, जिसमें **चान्द्रमासीय शुक्लपक्ष** और **चान्द्रमासीय कृष्णपक्ष** नामक दो पक्ष होते हैं, जिनका विवरण निम्न हैं -

### 5.4.1 चान्द्रमासीय शुक्लपक्ष

भ चक्र में जब सूर्य और चन्द्रमां एक राशि अंश कला आदि पर स्थित होते हैं वह बिन्दु अमान्त अथवा प्रतिपदा का आदि बिन्दु होता है। यहां से जैसे ही चन्द्रमा अपनी अधिक गति के कारण सूर्य को पीछे छोड़ जैसे जैसे 12 - 12 अंश आगे बढ़ता है बैसे बैसे प्रतिपदा द्वितीया तृतीया आदि तिथियों का क्रमशः निर्माण होता चला जाता है, इसी तरह जब सूर्य और चन्द्रमा के मध्य 180 अंश का अन्तर आता है तब पूर्णिमां तिथि का समापन होता है यही दूरी अर्थात् गगनमण्डल में सूर्य और चन्द्रमां राश्यात्मक स्पर्श से 180 अंश की दूरी को मध्य के कालखण्ड को शुक्ल पक्ष कहते हैं। इस पक्ष में चन्द्रमां आकाश में चमकता है जिससे भूमण्डल पर श्वेत (शुक्ल) प्रकाश फैल जाता है इस कारण ही इस पक्ष को शुक्ल पक्ष कहते हैं।

### 5.4.2 चान्द्रमासीय कृष्णपक्ष

आकाश में जब सूर्य और चन्द्रमां परस्पर 180 अंश पर स्थित होते हैं तब वह पूर्णिमान्त अथवा प्रतिपदादि बिन्दू होता है अर्थात् पूर्णिमा का अन्तिम बिन्दु अथवा अग्रिम तिथि प्रतिपदा का प्रारम्भिक बिन्दु होता है । यहां से सूर्य और चन्द्रमा में क्रमशः 12 - 12 अंश की दूरी से प्रतिपदादि तिथियां बनती हैं तथा जब पुनः सूर्य व चन्द्रमां का मिलन होता है तथा एक राशि अंश कला विकला पर आ जाते हैं तब बह बिन्दु अमावस्या का अन्तिम बिन्दु होता है। सूर्य से 180 अंश की दूरी से चन्द्रमां का पुनः सूर्य से मिलन तक की दूरी ही कृष्णपक्ष कहलाता है। इस पक्ष में चन्द्रमां सूर्य की ओर आते आते सूर्य की चमक में खो जाता है जिस कारण भूमि पर अंधेरा छा जाता है अतः विद्वानों ने इस पक्ष को कृष्ण पक्ष का नाम दिया।

## 5.5 मास की परिभाषा एवं भेद

वस्तुतः उपर्युक्त शुक्ल और कृष्ण पक्ष के मिलने पर एक मास का नाम दिया गया है। जैसा कि विदित है कि चन्द्रमा, सूर्य की अपेक्षा तीव्र गतिक ग्रह है इसलिए आकाश मण्डल में चन्द्रमा और सूर्य के राश्यादि स्पर्श से लेकर इनके पुनः चन्द्रमा और सूर्य के मिलने तक की यात्रा का नाम ही वास्तव में मास का नाम विद्वानों ने दिया गया है। परन्तु फिर भी आचार्यों ने मास के चार प्रकार बताए हैं। जो कि निम्नलिखित हैं -

### 5.5.1 सौरमास

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसका सम्बन्ध सूर्य से है। अर्थात् जिस प्रकार 60 घटी मिलकर एक अहोरात्र का निर्माण करती है उसी प्रकार 30 अहोरात्र मिलकर एक मास का निमार्ण करते हैं । जिस प्रकार सूर्य द्वारा एक अंश को भोगने में लिया जाने वाला समय सौर दिवस कहलाता है, उसी तरह के 30 सौर दिवसों को मिलाकर एक सौर मास का निर्माण होता है । शास्त्रीय भाषा में कहें तो एक वर्ष में 12 संक्रान्तियां होती हैं, वास्तव में इन 12 संक्रान्तियों का नाम ही सौर मास है। सरल भाषा में कहें तो आकाश मण्डल में सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण को ही संक्रान्ति कहा जाता है। इसलिए सूर्य द्वारा एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति में प्रवेश तक के काल खण्ड का नाम ही सौर मास है। एक वर्ष में मेष - वृष - मिथुन - कर्क - सिंह - कन्या - तुला - वृश्चिक - धनु - मकर - कुम्भ - मीन नामक बारह संक्रान्तियां होती है तथा यही मेष - वृषादि संक्रान्तियां ही सौर मास के नाम से जानी जाती हैं।

### 5.5.2 चान्द्रमास

चान्द्रमास का सम्बन्ध भी चान्द्र दिवसों से ही है । जिस प्रकार शुक्ल और कृष्ण पक्ष को मिलाकर तीस तिथियां होती हैं। इन्हीं तीस तिथियों के मान को चन्द्रमास कहते हैं। चान्द्रमास भी मेषादि 12 सौर मासों की तरह **चैत्र - वैशाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - आश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन** आदि 12 चान्द्रमास ही होते हैं। गणितीय दृष्टि से समझें तो यह स्पष्ट है कि भ चक्र में 360 अंश होते हैं तथा 12 अंश की एक तिथि होती है। तो हम अगर 360 में 12 का भाग दें तो 30 शेष आता है यहीं तिथियां हैं जिनसे मिलकर चान्द्रमास का निर्माण होता है। तात्पर्य यह है कि इन तीस तिथियों में चन्द्रमा भ चक्र में सूर्य का एक भ्रमण कर लेता है यही भ्रमण काल एक चान्द्रमास कहलाता है। हमारे देश भारतवर्ष में दो प्रकार के चान्द्रमासों का प्रचलन प्राप्त होता है, यथा -

### 5.5.2.1 शुक्लादि चान्द्रमास

वस्तुतः मास की परिभाषा हम अब तक समझ ही चुके हैं तथापि शुक्लादि चान्द्रमास से तात्पर्य है कि जिस मास में शुक्ल पक्ष आदि में हो अर्थात् जिस मास के प्रारम्भ में शुक्ल पक्ष आता हो वह मास शुक्लादि मास होता है। सरल शब्दों में कहें तो जिस मास का प्रारम्भ शुक्ल प्रतिपदा से हो तथा मध्य में पूर्णिमां एवम् अमावस्या से समाप्ति हो वह मास शुक्लादि चान्द्रमास कहलाता है। इस मास को अमान्त मास भी कह सकते हैं।

### 5.5.2.2 कृष्णादि चान्द्रमास

जैसे कि कृष्णादि नाम से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस मास के प्रारम्भ अथवा आदि में कृष्ण पक्ष आता हो वह कृष्णादि मास कहलाता है, और सरल भाषा में कहें तो जिस मास के प्रारम्भ में कृष्ण की प्रतिपदा आए तथा मास के मध्य में अमावस्या एवं पूर्णिमां तिथि से समापन हो वह मास कृष्णादि चान्द्रमास कहलाता है। इस मास को ही पूर्णिमान्त मास भी कहा जाता है।

सामान्यतः उत्तर भारत के अधिकांश हिस्सों में शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से संवत्सर का आरम्भ माना जाता है फिर भी मास व्यवस्था में प्रथम पक्ष कृष्णपक्ष को ही माना जाता है। इसी प्रकार मुख्यतः दक्षिण भारत में शुक्लादिमास व्यवस्था को मानते हैं। जहां पर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या पर्यन्त 30 तिथियों का मास शुक्लादि चान्द्रमास होता है। इसमें पूर्णिमां मास की मध्यतिथि तथा अमावस्या मास की 30 वीं अर्थात् अन्तिम तिथि है। इस प्रकार कुछ प्रदेशों में शुक्लादि और कुछ प्रदशों में कृष्णादि चान्द्रमास प्रचलित हैं। इनमें कोई भेद नहीं है। एक चान्द्रमास लगभग 29 दिन 8 घण्टे 44 मिनट 2 सेकेण्ड का होता है।

### 5.5.3 नाक्षत्रमास

सौरमास व चान्द्रमास के अनन्तर नाक्षत्रमास को भी समझने का प्रयास करते हैं यथा आकाश में प्रवादि सप्त वायु प्रवाहमान हैं जिनमें प्रवह नामक वायु से प्रेरित होकर सभी ग्रह निरन्तर अत्यन्त वेगायमान होकर पश्चिम दिशा में जाते हुए हमें प्रतिभासित होते हैं। इसी प्रवहवायु के प्रभाव से नक्षत्र पूर्व क्षितिज से चलकर जितने समय में पुनः उसी पूर्वी क्षितिज में आता है उस काल को ही नाक्षत्र दिन के नाम से जाना जाता है और यह 60 घटी अथवा 24 घण्टे की निश्चित अवधि का होता है। इस प्रकार के 30 नक्षत्र दिवसों से मिलकर एक नाक्षत्रमास बनता है। वर्तमान में यह मास इतना प्रचलित नहीं है।

### 5.5.4 सावनमास

जैसा कि हम पूर्व में ही जान चुके हैं कि **उदयोउदयाद्भानोर्भूमिसावनवासरः** के नियमानुसार एक सूर्योदय से अग्रिम सूर्योदय के मध्य के कालखण्ड को सावनदिन के नाम से जानते हैं। इसी प्रकार एक सूर्योदय से अग्रिम 30 सूर्योदयों वाले दिन अर्थात् 30 सावन दिन अथवा अहोरात्रों से मिलकर एक सावन मास का निमार्ण होता है। सामान्यतया इस प्रकार के (सावन) मासों का प्रचलन नहीं हैं।

## 5.6 वर्ष की परिभाषा एवं भेद

वस्तुतः वर्ष का तात्पर्य सौर वर्ष से है। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि हम जब भी वर्ष-मास-और दिन की चर्चा करेंगे तो वहां सामान्य रूप से वर्ष से तात्पर्य सौर वर्ष से तथा मास का तात्पर्य चान्द्रमास से व दिन से तात्पर्य सावन दिन से होता है फिर भी हम वर्ष को निम्न चार स्वरूपों में समझ सकते है

**सौरवर्ष - चान्द्रवर्ष - सावनवर्ष - बार्हस्पत्यवर्ष**

### 5.6.1 सौरवर्ष

वैसे हमने पहले ही चर्चा की हुई है कि सूर्य द्वारा एक अंश को भोगने में लिया जाने वाला समय, एक सौर दिन कहलाता है। इसी प्रकार के 30 सौर दिनों के मिलने से एक सौरमास होता है। इसी प्रकार 12 सौरमासों के काल खण्ड को एक सौर वर्ष के नाम से जानते हैं। अर्थात् हम कह सकते हैं कि सूर्य आकाश में आज जिस राशि अंश कला विकलादि पर स्थित है पुनः इन्हीं राशि अंश कला विकलादि पर सूर्य को आने में ठीक 360 सौर दिन लगते है इसी कालावधि को एक सौरवर्ष के नाम से जानते हैं। सामान्य शब्दों में कहें तो सूर्य का एक भगण ही सौर वर्ष है।

### 5.6.2 चान्द्रवर्ष

चान्द्रवर्ष से हम समझ सकते है कि इसका सम्बन्ध चन्द्रमां से है। जिस प्रकार सूर्य चान्द्रमां की 12 अंशों की दूरी के अनुसार तिथियां बनती है उसी प्रकार 30 तिथियों से एक चान्द्रमास का निर्माण होता है। पूर्वलिखित चैत्र वैशाख आदि 12 चान्द्रमासों से एक चान्द्रवर्ष का निर्माण होता है। एक सौर वर्ष में प्रायशः 12 चान्द्रमास होते है, वहीं में यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए की यदि किसी सम्वतसर में अधिक मास है तो उस सौर वर्ष में 12 के स्थान पर 13 मास होंगे तथा यदि किसी सम्वतसर में क्षय मास हुआ तो उस सौर वर्ष में 12 के स्थान पर 11 मास ही होंगे । इस चान्द्र वर्ष में लगभग 354 (सावन) दिन होते हैं। साथ ही यहां यह भी ध्यातव्य रहे कि चन्द्रमां एक राशि में लगभग सवा दो दिन रहता है और अपना एक भ्रमण लगभग 29 दिनों में पूर्ण करता है।

### 5.6.3 सावनवर्ष

वस्तुतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो चुका है कि दिवसात्मक मान को 30 से गुणा कर मासात्मक मान निकलता है। इसी प्रकार 30 सावन दिनों को मिलाकर एक सावन मास बनता। इस प्रकार 12 सावन मासों की गणना से मिलकर एक सावन वर्ष का निर्माण होता है। एक सौर वर्ष में लगभग 365 दिन होते हैं। वर्तमान में यह मास प्रचलन में नहीं है।

### 5.6.4 बार्हस्पत्यवर्ष

सम्वत्सर के आनयन में बार्हस्पत्य वर्ष का प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः भूमि पर सामूहिक रूप से सुभिक्ष व दुर्भिक्ष आदि के फल का विवेचन बार्हस्पत्य वर्ष अथवा सम्वत्सर से किया जाता है। यह बार्हस्पत्य सम्वत्सर सूक्ष्म तौर पर 361 दिन के लगभग होता है। विजयादि क्रमशः 60 सम्वत्सर होते हैं। प्रत्येक 60 वर्ष के उपरान्त पुनः विजयादि 60 सम्वत्सर हुआ

करते हैं। मेषादि राशि में मध्यम बृहस्पति के रहने पर क्रमशः विजयादि सम्वत्सर होते है, इन 60 सम्वत्सरों के नाम निम्न हैं-

मेषादि राशि में में बृहस्पति के रहने पर क्रमश: विजय आदि सम्वत्सर

| राशि | बृहस्पति के राशि संचरणानुसार क्रमशः विजयादि सम्वत्सर | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मेष | 01.विजय | 13.विश्वावसु | 25.पिंगल | 37. शुक्ल | 49.वृष |
| वृष | 02.जय | 14.पराभव | 26.कालपुत्र | 38. प्रमोद | 50.चित्रभानु |
| मिथुन | 03.मन्मथ | 15. प्लवङ्ग | 27.सिद्धार्थी | 39.प्रजापति | 51.सुभानु |
| कर्क | 04.दुर्मुख | 16.कीलक | 28.रौद्र | 40.अङगिरा | 52.तारण |
| सिंह | 05.हेमलम्ब | 17.सौम्य | 29.दुर्गति | 41.श्रीमुख | 53.पार्थिव |
| कन्या | 06.विलम्ब | 18.साधारण | 30.दुन्दुभि | 42.भव | 54.व्यय |
| तुला | 07.विकारी | 19.विरोधकृत | 31.रुधिरोद्गारी | 43.युवा | 55.सर्वाजित् |
| वृश्चिक | 08.शर्वरी | 20.परिधावी | 32.रक्ताक्ष | 44.धाता | 56.सर्वधारी |
| धनु | 09.प्लव | 21.प्रमादी | 33.क्रोधन | 45.ईश्वर | 57.विरोधी |
| मकर | 10.शुभकृत् | 22.आनन्द | 34.क्षय | 46.बहुधान्य | 58.विकृत |
| कुम्भ | 11.शोभन | 23.राक्षस | 35.प्रभव | 47.प्रभाथी | 59.खर |
| मीन | 12.क्रोधी | 24. नल | 36.विभव | 48.विक्रम | 60.नन्दन |

जैसा कि विदित है पहले विजयादि की गणना प्रचलित थी। परन्तु आजकल विक्रम सम्वत् के आधार पर प्रभव आदि सम्वत्सर की गणना प्रचलित है। इसलिए आजकल पंचागों में विक्रम सम्वत्सर के आधार पर गणना होती है जिसमें प्रथम सम्वत्सर प्रभव आता है इसलिए यह क्रम विजयादि न होकर प्रभवादि सम्वत्सर होगा। यह क्रम इस तरह होगा - मेषादि राशि में बृहस्पति के रहने पर क्रमश: विजय आदि सम्वत्सर

| राशि | बृहस्पति के राशि संचरणानुसार क्रमशः विजयादि सम्वत्सर | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मेष | 01.प्रभव | 13.प्रभाथी | 25.खर | 37.शोभन | 49.राक्षस |
| वृष | 02.विभव | 14.विक्रम | 26.नन्दन | 38.क्रोधी | 50. नल |
| मिथुन | 03. शुक्ल | 15.वृष | 27.विजय | 39.विश्वावसु | 51.पिंगल |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कर्क** | 04. प्रमोद | 16.चित्रभानु | 28.जय | 40.पराभव | 52.कालपुत्र |
| **सिंह** | 05.प्रजापति | 17.सुभानु | 29.मन्मथ | 41. प्लवङ्ग | 53.सिद्धार्थी |
| **कन्या** | 06.अङगिरा | 18.तारण | 30.दुर्मुख | 42.कीलक | 54.रौद्र |
| **तुला** | 07.श्रीमुख | 19.पार्थिव | 31.हेमलम्ब | 43.सौम्य | 55.दुर्गति |
| **वृश्चिक** | 08.भव | 20.व्यय | 32.विलम्ब | 44.साधारण | 56.दुन्दुभि |
| **धनु** | 09.युवा | 21.सर्वाजित् | 33.विकारी | 45.विरोधकृत | 57.रुधिरोद्गारी |
| **मकर** | 10.धाता | 22.सर्वधारी | 34.शर्वरी | 46.परिधावी | 58.रक्ताक्ष |
| **कुम्भ** | 11.ईश्वर | 23.विरोधी | 35.प्लव | 47.प्रमादी | 59.क्रोधन |
| **मीन** | 12.बहुधान्य | 24.विकृत | 36.शुभकृत् | 48.आनन्द | 60.क्षय |

## 5.7 अयन की परिभाषा एवं भेद

सामान्यतया शास्त्र की दृष्टी से अयन का तात्पर्य गमन अथवा मार्ग से है। वस्तुतः एक सौरवर्ष में दो अयन होते हैं। जिन्हें सौम्यायन अथवा उत्तरायण तथा याम्यायन जिसे दक्षिणायन के नाम से जानते हैं। अन्य शब्दों में कहें तो नभोमण्डल में सूर्य का उत्तर की ओर गमन उत्तरायन और दक्षिण की ओर गमन दक्षिणायन कहलाता है। अर्थात् मकरसंक्रान्ति से मिथुनान्त तक सूर्य उत्तरायण रहता है तथा कर्कसंक्रान्ति से धनुरान्त तक सूर्य दक्षिणायन में रहता है। अतः स्पष्ट है सूर्य एक राशि में एक मास रहता है तो मकरादि से मिथुनान्त तक 6 राशि अर्थात् 6 माह तक सूर्य उत्तरायन में रहता है तथा कर्कादि से धनुरान्त तक 6 माह सूर्य दक्षिणायन में रहता है। इसे हम निम्न तालिका के माध्यम से भी समझने का प्रयास करते हैं:-

| **उत्तरायण या सौम्यायन** | |
|---|---|
| मेष | मीन |
| वृष | कुम्भ |
| मिथुन | मकर |
| **दक्षिणायन या याम्यायन** | |
| कर्क | धनु |
| सिंह | वृश्चिक |
| कन्या | तुला |

उपर्युक्त सारिणी द्वारा हम स्पष्टरूप से समझ सकते हैं कि जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है तब उत्तरायण का प्रारम्भ हो जाता है तथा मिथुनान्त तक उत्तरायण अथवा सौम्यायन रहता है। इसी प्रकार सूर्य के कर्क राशि में प्रवेश से धनु राशि के अन्तिम बन्दु तक रहने को दक्षिणायन के नाम से जानते है।

## 5.8 गोल की परिभाषा एवं भेद

वस्तुतः गोल भी अयन की तरह दो होते है। प्रथम उत्तरगोल द्वितीय दक्षिण गोल। गोल का सम्बन्ध भी सूर्य का राशियों में भ्रमण से है अर्थात् सूर्य जब मेष राशि से कन्या राशि पर्यन्त रहता है तब तक उत्तरगोल कहलाता है तथा तुला राशि से मीन राशि पर्यन्त रहने पर दक्षिण गोल मानते हैं। यह भी 6-6 माह में विभाजित होता है यथा 6 माह उत्तरगोल और 6 माह दक्षिण गोल में सूर्य रहता है। निम्न तालिका के माध्यम से और स्पष्ट रूप से समझने का प्रयास करते हैं -

| **उत्तरगोल** | **दक्षिणगोल** |
|---|---|
| मेष | मीन |
| वृष | कुम्भ |
| मिथुन | मकर |
| कर्क | धनु |
| सिंह | वृश्चिक |
| कन्या | तुला |

इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा से उत्तर का भाग उत्तरगोल और भूमध्य रेखा से दक्षिण का भाग दक्षिण गोल कहलाता है।

गोल के सन्दर्भ में यहां यह भी ध्यातव्य है कि उत्तर गोल अर्थात् सूर्य के मेष से कन्या राशि में रहने तक का समय देवताओं का दिन कहलाता है तथा इसी प्रकार दक्षिण गोल अर्थात् सूर्य के तुला राशि से मीन राशि पर्यन्त रहने को ही देवताओं की रात्रि कहते है।

## 5.9 साराश

इस इकाई अध्ययन के उपरान्त हमने जाना कि यह काल अनन्त और अनादि होने के कारण अनिर्वचनीय है। इसे किसी प्रकार के शब्दों में या एक परिभाषा में आबद्ध कर देना कोई सरल कार्य नहीं है। पुराणों में काल की महिमा का कीर्तन करते हुए कहते हैं कि यही काल है जो इस सृष्टि का कर्ता भी है संहर्ता भी। कहा भी है - **कालः सृजति भूतानि कालः संहरति प्रजाः।** सूर्य सिद्धान्त में भगवान सूर्य स्वयं काल के रहस्य को निरूपित करते हुए कहते हैं कि **लोकानामन्तकृत् कालः कालोऽनयः कलनात्मकः। स द्विधा स्थूल सूक्ष्मत्वात् मूर्तश्चामूर्त उच्यते।**

अर्थात् इसके बारे में हम पढ़ भी चुके हैं कि काल के दो भेद है प्रथम अन्तकृत लोक का नाश करने वाला तथा द्वितीय काल कलनात्मक है। यह कलनात्मक काल भी मूर्त और अमूर्त भेद से दो प्रकार का है। इसको हम यूं भी समझ सकते हैं कि जो व्यवहार योग्य काल है वह स्थूल अथवा मूर्त है तथा जो व्यवहार योग्य नहीं है वह सूक्ष्म या अमूर्त काल है। वस्तुतः गणितीय दृष्टि से दोनों काल, काल की दो अवस्थाएं ही हैं। अतः ये दोनों काल ही हैं। किसी की भी उत्पत्ति एक कालखण्ड में ही होती है तथा जिसकी उत्पत्ति होती है उसका लय होना भी सुनिश्चित ही है यह सब काल की ही महिमा है। यही उत्पत्ति लय का सिद्धान्त प्रकृति पर भी लागू होता है, इसमें सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक की कालावधि कलनात्मक काल ही है। इसके ही दो विभेद बताये हैं जिनकी चर्चा इस इकाई के प्रारम्भ में मूर्त और अमूर्त काल के रूप में कर चुके हैं। जैसे हम सभी अपना कार्य सूर्योदय होने पर अर्थात् दिन के होने पर करने लगते हैं तथा सूर्यास्त पर अपना सारा कार्य समेट लेते है ठीक इसी प्रकार भगवान ब्रह्मा भी अपने दिन कल्प के हिसाब से सृष्टि निर्माण की प्रकि्रया प्रारम्भ करते है तथा सूर्यास्त या सब कुछ समेट कर सोने चले जाते है इसी काल अवधि को एक कल्प कहा तथा ब्रह्मा की रात्रि को भी एक कल्प के तुल्य माना फिर पुनः ब्रह्मा का दिवसारम्भ होता है फिर वे सृष्टि को रचते है और पुनः सूर्यास्त पर सब कुछ समेट लेते है। सृष्टि का यही क्रम चलता रहता है। इस प्रकार सारांश के तौर हम कह सकते है कि सष्ट्यन्त और कल्पान्त दोनों ही काल की महत्तम इकाई के पर्याय हैं। ठीक इसी प्रकार स्थूल काल की लघुत्तम इकाई प्राण तथा सूक्ष्म काल की लघु इकाई त्रुटि कही गयी।

## 5.10 शब्दावली

राशि = सवा दो नक्षत्रों के समूह को राशि कहते है ये मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन आदि होती हैं।

नक्षत्र = अर्थात् जो चलता नहीं, 12 राशियों के भ्रमण में अपनी अपनी विशेष आकृतियों से युक्त 13 अंश 20 कला के मान के अश्विनी भरणी आदि 27 नक्षत्र होते है। इनमें अपनी गति नही होती।2.1 नक्षत्रकाल = नियत समय के द्योतक जैसे घटी- पल- विपल, अथवा घण्टा, मिनट, सेकेण्ड।

सौर = इसका सम्बन्ध सूर्य से है।

चान्द्र = इसका सम्बन्ध चन्द्रमा से है।

सावन दिन = एक सूर्योदय से अग्रिम सूर्योदय के मध्य का काल।

भगण = सम्पूर्ण राशि मण्डल को भगण कहते हैं। अर्थात् कोई ग्रह जब आकाश में स्थित सम्पूर्ण (12) राशियों का एक भ्रमण कर ले तो यह एक भगण होता है।

अहर्गण = सृष्टि में प्रारम्भ से आज तक के सावन दिनों की संख्या।

अमान्त = अमावस्या का अन्तिम बिन्दु।

पूर्णिमान्त = पूर्णिमा का अन्तिम बिन्दु।

संक्रान्ति = संक्रमण सूर्य द्वारा एक राशि से दूसरी राशि में जाना ही संक्रान्ति होती है।

| | | |
|---|---|---|
| ग्रह | = | वे आकाशीय पिण्ड जो स्वयं की गति से चलते हैं। |
| प्रवह वायु | = | भूमि से बहुत उपर एक विशेष प्रकार की वायु जो समस्त ग्रह- नक्षत्र मण्डल को पूर्व की ओर घुमा रही है। |
| क्षितिज वृत | = | खमध्य से 90 °व्यासार्द्ध से निर्मित वृत होता है। |
| क्षितिज | = | खुले स्थान पर भूमि पर दूर देखने पर एक स्थान पर भूमि और आकाश के मिले हुए दिखायी देने को क्षितिज कहते है। |
| सृष्ट्यादि | = | ग्रह - नक्षत्र - भूमि आदि सकल पदार्थो की जब उत्पत्ति हुई उसी समय को सृष्ट्यादि कहते हैं। |
| लघुत्तम | = | सबसे छोटा। |
| महत्तम | = | सबसे बड़ा। |
| कल्प | = | ब्रह्मा जी का एक दिन (1000 महायुगों का मान) |
| मन्वन्तर | = | 71 महायुगों का मान। |
| दिव्यवर्ष | = | देवताओं का वर्ष (360 सौर वर्ष तुल्य) |
| दिव्यदिन | = | देवताओं का दिन (एक सौर वर्ष तुल्य) |
| वार्हस्पत्य | = | वृहस्पति से सम्बन्धित |

## 5.11 उपयोगी पुस्तकें

1. सूर्य सिद्धान्त:- आचार्य कपिलेश्वर शास्त्री
2. सिद्धान्त शिरोमणी:- चौखम्भा प्रकाशन वाराणासी
3. प्राच्याविद्यानुशीलनम्:- प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
4. श्रीमद भगवदगीता:- गीता प्रेस।
5. विष्णुपुराण:- गीता प्रेस।
6. भारतीय कुण्डली विज्ञान:- मीठालाल ओझा।

## 5.12 बोध प्रश्न

1. काल की परिभाषा समझाते हुए कालगणना को विस्तार से वर्णन करें।
2. ज्योतिषशास्त्र में वर्षमानों के प्रकार लिखते हुए उनका विस्तार से वर्णन करें।
3. प्राचीन व आधुनिक कालमानों का तुलनात्मक व्याख्या कीजिए?
4. ज्योतिषशास्त्र के काल गणना में चन्द्र का महत्त्व का विस्तार से वर्णन करें।
5. ज्योतिषशास्त्र में काल को जानना क्यो आवश्यक है ? उसको समझाते हुए वर्णन करें।